मूर्तिपूजा-एक वैज्ञानिक मीमांसा

मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में आज विश्व समाज में बहुत भ्रान्ति फैली हुई है, अतएव निम्न पंक्तियों में इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

1. श्रद्धा का आधार :- किसी व्यक्ति विशेष, महापुरुष, राजा, नेता, गुरु आदि के चित्र अथवा मूर्तियाँ बनाने का चलन प्राचीन काल से चला आया है । ये सभी लोग समाज के प्रतिष्ठित, गणमान्य व्यक्तियों में होते थे, अतएव जनता प्रतीकों के माध्यम से उनके प्रति आदर भाव प्रकट करती रही है । वास्तव में, मूर्ति वह व्यक्ति विशेष तो नहीं है, परन्तु उस व्यक्ति का स्वरूप होने के कारण आदर एवम् श्रद्धा भाव से पूजनीय रहा है तथा अपने पूज्य के प्रति आदर एवम् श्रद्धा प्रकट करने की यह सरलतम विधि भी है । इसी प्रकार सृष्टि का सृजन करने, नियमन करने, एवम् संहार का महानतम कार्य ईश्वर के द्वारा होता है, अतएव वह परमात्मा भी अति श्रद्धा और आदर का पात्र है । चूँकि वह किसी को दिखलायी नहीं पड़ता, अतः उस परमात्मा को चित्र अथवा अधिक आकर्षक मानव मूर्ति के रूप में चित्रित कर आदर प्रकट किया गया है। मूर्तियाँ भी कई प्रकार की वस्तुओं से बनायी गयी, जैसे:- मिट्टी, पीतल, लोहा, सप्तधातु (Bronze), लकड़ी, पत्थर आदि ।

2. साधना का आधार:- आदिकाल में ऋषि विश्वामित्र ने अपने शोध मंत्र **'गायत्री'** के माध्यम से यह सुझाया था, कि **'ॐ'** नाम का जप करने एवम् **'प्रकाश'** पर मन को एकाग्र करने से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है **(भर्गो देवस्य धीमहि)** । तब इस सिद्धान्त को आधार बनाकर **'नाम + रूप'** द्वारा निराकार परमात्मा एवम् अनेक परमात्म शक्तियों को सगुण-साकार रूप दिया गया और मानवीय चित्रों तथा मूर्तियों का निर्माण किया गया । यह प्रयोग मनोविज्ञान के सिद्धान्त के अनुकूल साबित हुआ तथा ईश्वर के निराकार रूप की अपेक्षा **'सगुण-साकार'** रूप अत्यन्त सरल तथा लोकप्रिय हुआ । **भगवान श्रीकृष्ण ने भी सगुण-साकार उपासना विधि को ही सरल व श्रेष्ठ माना है ।** *(गीता-12/2)*

इस सगुण-साकार उपासना पद्धति के सिद्धान्त की भारी बहुमत से स्वीकृति के कारण ही वेद के अन्य आठ मुख्य सिद्धान्तों के पश्चात् इसे नौवें स्थान पर शामिल कर लिया गया और गायत्री को **'वेद-माता'** के नाम से गौरव प्रदान किया गया । वेद के मुख्य सिद्धान्त निम्न प्रकार से हैं:-

i) **चक्र/ गति/ परिवर्तनशीलता एवम् पुनर्जन्म का सिद्धान्त**
ii) **अनुलोम-विलोमता का सिद्धान्त**
iii) **कर्म का सिद्धान्त**
iv) **स्वर्ग एवं नरक लोकों का सिद्धान्त**
v) **यज्ञमय जीवन यापन का सिद्धान्त**

vi) **मोक्ष एवं मुक्ति का सिद्धान्त**
vii) **'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' का सिद्धान्त**
viii) **निर्गुण-निराकार उपासना अर्थात् एकेश्वरवाद और**
ix) **सगुण-साकार उपासना अर्थात् अनेकेश्वरवाद ।**

3. वैज्ञानिक आधार :- पिछली शताब्दी में तार (Telegram) की भाषा बिन्दु (dot) एवम् रेखा (dash), जिसे Morse Code कहा जाता है, के द्वारा देश-विदेश में संदेश भेजे जाते थे । **आज शून्य (zero) एवम् एक (one) इन दो चिन्हों के द्वारा कम्पयूटर ने पूरे विश्व में सूचना तकनीक का विस्फोट कर दिया है । शिक्षित समाज जानता है, कि कम्पयूटर-चिप में शून्य तथा एक के चिन्हों की क्रियाशीलता एलेक्ट्रॉन (Electron) के कारण होती है, न कि स्वयम् चिह्नों के कारण । इसी प्रकार मूर्ति में भी प्राणों का स्पन्दन साधक की भावना द्वारा उत्पन्न ध्यान सिद्धि से होता है, न कि स्वयम् मूर्ति से, परन्तु मूर्ति ध्यान साधना में सहायक है, अतएव इसका महत्व है ।**

बीजगणित (Algebra) में a, b, c, x, y, आदि चिह्नों की भाषा द्वारा बड़ी से बड़ी कठिन समस्याओं का गणित कर लिया जाता है । इसी तरह Differential और Integral Calculus द्वारा भी ऐसे ही संकेतों से बड़े-बड़े असमान क्षेत्रों का क्षेत्रफल, घनफल और भी अनेक गणित की समस्याओं को हल कर लिया जाता है । रसायन-शास्त्र (Chemistry) हो अथवा भौतिक-शास्त्र (Physics) सभी विज्ञान की शाखाओं में C, H, N, O आदि चिह्नों का खुलकर प्रयोग किया जाता है तथा इन चिन्हों द्वारा बड़ी-बड़ी खोजों को आधार मिलता है। **$E = mc^2$ भी उन महान खोजों में एक है, जिसका अर्थ है, कि पदार्थ तथा शक्ति आपस में रूपान्तरित होते रहते हैं ।**

किसी नदी की चौड़ाई हो अथवा पहाड़ की ऊँचाई, तारों की दूरी आदि सभी Trignometry द्वारा गणित कर लिए जाते हैं । यह सब चमत्कार गणित में प्रयोग किए जाने वाले चिन्हों का है । **इस बात का महत्व भारत के मनीषियों ने ठीक से अनुभव किया, कि मानव जीवन की अनेक मूलभूत समस्याओं को हल कर सकने में चिह्न सहायक हैं । इस सिद्धान्त की खोज को भारतीय चिन्तकों ने ईश्वर प्राप्ति में भी सफलता पूर्वक प्रयोग किया और चित्र तथा मूर्तियों का निर्माण इसी सिद्धान्त की परिणति है ।**

चिकित्सा विज्ञान का समावेश:-

(अ) मानसिक उपचार (Psycho Therapy):- चूँकि सभी शारीरिक व्याधियों का सूत्रपात मन के उद्वेलन से ही प्रारम्भ होता है, अतएव मानसिक उपचार को प्राथमिकता दी गयी । इसीलिए मनोद्वेगों के प्रवाह की दिशा को प्रेम एवम् भक्ति की ओर मोड़ने का प्रयास किया गया। क्योंकि हर व्यक्ति अपने प्रियजनों से ही सरलता से प्रेम कर

सकता है, अतएव मूर्तियों का निर्माण मानवीकृत स्वरूपों में किया गया तथा भक्त को उस परमात्मा से स्वामी, पिता, माता, सुहृद, पुत्र आदि का सम्बन्ध स्थापित करने की सीख दी गयी। इस प्रकार मानव-मूर्ति प्रेम करने के लिए ठोस आधार बनीं । इसे ही भक्ति के नाम से जाना गया है। ध्यान प्रक्रिया में भक्ति द्वारा शीघ्र सफलता की सम्भावना रहती है।

(ब) रंगों द्वारा उपचार (Chromo Therapy):- भौतिक विज्ञान में बतलाया गया है, कि श्वेत प्रकाश में VIBGYOR नाम से सात रंग होते हैं। भगवान शिव का रंग तेजोमय श्वेत है, क्योंकि श्वेत रंग में सभी रंग समाए हुए हैं, इसीलिए ये महेश्वर अर्थात् सभी देवताओं के ईश्वर हैं । इन सात रंगों से सात देव शक्तियों का सम्बन्ध है। इन सातों रंगों की अपनी-अपनी अलग आवृत्ति (Frequency) होती हैं। जिस रंग की आवृत्ति (Frequency) जितनी ऊँची है, उतना ही वह देवता अधिक शक्तिशाली है तथा अधिक मन: शान्ति तथा शक्ति का दाता हैं। **इन रंगों सहित देवता पर ध्यान करने से सुषुम्ना पर स्थित चक्र प्रभावित होते हैं तथा अन्तर्ग्रंथियों (Endocrineglands) से जीवन रसों (Hormones) का संतुलित स्राव होकर शारीरिक एवम् मानसिक स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ सांसारिक मनोरथों की पूर्ति भी होती है।** नीचे हर देवता का रंग तथा अलग-अलग Frequency दिए गए हैं तथा इनको प्रकाश के सात रंगों की पट्टिका (VIBGYOR) के क्रम में लिखा गया है ।

देवता	रंग	आवृत्ति प्रति सेकण्ड	चक्रों की स्थिति	चक्र का नाम
1. ~~ब्रह्म~~ शिव	श्याम	790-680 × 10^{12}	सहस्रार	सहस्रार
2. ~~आकाश-तत्त्व~~	आकाशीय नीला	680-670 × 10^{12}	कण्ठ	विशुद्धि
3. विष्णु	नीला	670-610 × 10^{12}	मूत्राशय क्षेत्र	स्वाधिष्ठान
4. गणेश	हरा	610-540 × 10^{12}	भृकुटि	आज्ञा
5. दुर्गा	पीत	540-510 × 10^{12}	जिगर एवम् ड्यूडनम	मणिपुर
6. हनुमान	नारंगी	510-460 × 10^{12}	हृदय	अनाहद
7. भैरव	लाल	460-390 × 10^{12}	मेरुपुच्छ	मूलाधार

4. निराकार बनाम साकार साधना पद्धति :- ईश्वर के बारे में हजारों वर्षों से मानव जाति में एक बड़ी भ्रान्ति पनपती रही है और उस भ्रान्ति के फलस्वरूप हजारों-लाखों तथा-कथित पण्डित वाद-विवाद करते आए हैं, कि **ईश्वर तो निराकार है, उसे सगुण-साकार मानना भूल ही नहीं, वरन एक गहरी भ्रान्ति भी है, इससे ईश्वर प्राप्ति सम्भव ही नहीं है ।** कुछ धर्मों की सोच है, कि ईश्वर के मानने की आवश्यकता ही नहीं है । मात्र अहिंसा, करुणा, प्रेम आदि सद्गुणों से मानव समाज का कार्य सुचारु रूप से चल सकता है । **इस प्रकार ईश्वरवादी बनाम निरीश्वरवादी तथा निराकारवादी बनाम साकारवादियों के बीच वाद-विवाद कट्टरता की हर सीमा लाँघता गया और समय-समय पर भयंकर खूनी संघर्षों की घटनाऐं भी होती रही हैं तथा आज भी हो रही है । ऋषि वशिष्ठ तथा ऋषि विश्वामित्र के बीच संघर्ष की प्राचीन कथा का सार भी निराकार बनाम साकार उपासना के सिद्धान्त के संघर्ष**

की कथा ही है, जिसकी अन्तिम परिणति वशिष्ठ द्वारा विश्वामित्र के सिद्धान्त को मान्यता दिए जाने से हुई तथा उन्हें ब्रह्मर्षि की उपाधि से अलंकृत करके विवाद का सुखद पटाक्षेप हुआ । परन्तु उस समय के पटाक्षेप और वैज्ञानिकता को समय-समय पर लोग भूलते रहे और चुनौती देते रहे, परिणामस्वरूप बार-बार विवाद में फँसते रहे । **मूर्ति पूजा की वैज्ञानिकता को न समझ पाने के कारण आज भी खूनी संघर्ष हो रहे हैं । इस प्रकार विश्व में अज्ञान तो फैल ही रहा है, साथ ही मानव जाति का भारी अहित भी हो रहा है ।**

5. हिन्दुओं में अन्तर्विरोध:- हिन्दुओं में भी कुछ पन्थ ऐसे हैं, जो मूर्तिपूजा को ठीक नहीं मानते और कट्टरता के कारण विद्वेष फैलाने में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते रहते हैं । वास्तव में, ईश्वर तो **'निराकार'** ही है, परन्तु **'निराकार'** पद्धति से ईश्वर उपासना करना बहुत ही कठिन है, अतएव ***बच्चों के पाठ्यक्रमानुसार 'क' से कबूतर 'ख' से खरगोश, का ठोस आधार देकर जन-साधारण की सुविधा हेतु ईश्वर उपासना को सरल बनाने का यह एक सफल प्रयास रहा है । ध्यान साधना के प्रगाढ़ होने पर अवलम्बन की आवश्यकता नहीं रहती तथापि यह बात सत्य है, कि मूर्ति श्रद्धा एवम् भक्ति की उत्प्रेरक है और ध्यान साधना में सहायक है ।***

कई देशों की सरकारों समेत लाखों लोग **'निराकारवादी'** बनाम **'साकारवादी'** संघर्ष में पूरे मानव समाज की ऊर्जा को नष्ट करने में लगे हुए हैं तथा उग्रवाद एवम् आतंकवाद द्वारा मानव जाति का उत्पीड़न करना उन्हें सार्थक लगता है । ***स्थायी विश्व शान्ति हेतु धर्म में वैज्ञानिकता के मुद्दे पर संयुक्तराष्ट्र की विशेष समिति द्वारा बहस की जानी चाहिए तथा विज्ञान द्वारा जो सिद्ध हो सके सिर्फ उन्हीं विचारों को मान्यता देकर एक विश्व धर्म की स्थापना होनी चाहिए । यह सोच सही नहीं है, कि धर्म तो मात्र विश्वास का विषय है । नहीं नहीं ! धर्म की पूरी तरह से विज्ञान द्वारा व्याख्या की जा सकती है ।*** वैदिक धर्म की विशेषता है, कि जन-साधारण हेतु धर्म की उपासना पद्धति विश्वास पर आधारित है, परन्तु **ज्ञानी** एवं **विज्ञानियों** के लिए शुद्ध **उपनिषदिक ज्ञान** की व्यवस्था है, जिसे पूर्ण रूप से वैज्ञानिक भाषा में परिभाषित किया जा सकता है । इस पद्धति में मूर्तिपूजा की आवश्यकता नहीं है । इसके अतिरिक्त नये विद्यार्थी से लेकर उच्च कोटि के विद्वान के लिए अलग-अलग उपासना विधियाँ नियत की गई हैं, ताकि हर बौद्धिक स्तर के व्यक्ति को विकास करते हुए ईश्वर तक ले जाया जा सके । खेद का विषय है, कि आज इस तरह की सीमा रेखाओं के सम्बन्ध में कदाचित् ही किसी को ठीक-ठीक जानकारी हो । ***इस समस्या के पूर्ण समाधान हेतु धर्म में वैज्ञानिकता की शिक्षा हर नागरिक को बचपन से दी जाये, तब सम्भव है, कि विश्व में विभिन्न मतों द्वारा उत्पन्न विद्वेष कम हो सकेगा ।***

6. स्वामी विवेकानन्द और मूर्तिपूजा:- इसी संदर्भ में एक सत्य कथा इस प्रकार से है, कि अमेरिका से लौटे स्वामी विवेकानन्द खेतड़ी के महाराजा के अतिथि बने । भोजन के पश्चात् महाराजा मूर्तिपूजा की बारम्बार आग्रह पूर्वक निन्दा करने लगे । स्वामी जी उनके

अनेक शास्त्रीय तर्कों को ध्यानपूर्वक सुनते रहे । अन्त में, स्वामी जी ने उनके ड्राइंग रूम में महाराजा के स्वर्गीय पिताजी की मूर्ति देखकर पूछा, कि यह मूर्ति किसकी है, तो महाराजा ने बतलाया, कि वह मूर्ति उनके पिताजी की है । ***इस पर स्वामी जी ने उनके हाथ में एक जूता देते हुए पूछा, कि क्या वे उस मूर्ति पर जूता मारना पसन्द करेंगे? इस पर महाराजा क्रोधित हो उठे, तब स्वामी जी ने पलट कर कहा, कि यह तो कलाकृति है, आपके पिताजी तो नहीं हैं, फिर संकोच क्यों ? इस पर महाराजा निरुत्तर हो गये और उन्हें समझ आ गया, कि मूर्ति से श्रद्धा और भक्ति की प्रेरणा मिलती है । साकार चित्र अथवा मूर्ति स्वयम् पिताजी न होते हुए भी आदर के योग्य है तथा ध्यानसाधना के लिए प्रारम्भ में ईश्वर की मूर्ति आवश्यक है ।*** इस प्रकार स्वामी जी ने सरल से सरल भाषा में महाराजा को मूर्ति पूजा का रहस्य समझा दिया। इसी प्रकार स्वामी जी द्वारा दी गयी शिक्षा को हम सब भी समाज के सामान्य वर्ग के लोगों को जन-साधारण की भाषा में तथा बुद्धिजीवी वर्ग को **'विज्ञान'** की भाषा में समझाने का प्रयास करें, ताकि समाज में जो गम्भीर मतभेद बने हुए हैं, वे दूर हों और सर्वत्र शान्ति की स्थापना हो सके ।

हरिः ॐ तत् सत् !